

Class-X

Hindi-A (002)



से गहरा लगाव था। ~~ले~~ केवल इसी बात पर लेखक ने
 उन्हें बुझलाते हुए देखा है कि हिंदी को हमारी राष्ट्रीय
भाषा का दर्जा दिया जाए। उन्हें 18 फाहर की
 हिंदी वालों द्वारा ही हिंदी की उपेक्षा पर बहुत दुख
 होता था।

(ग) 'लखनवी अंदाज' पाठ में लेखक ने सैकंड क्लास का
 टिकट इसलिए खरीदा क्योंकि वह एकांत में समय बिताकर
 अपनी नई कहानी के विषय में सोचना चाहते थे। साथ
 ही खिड़की से प्राकृतिक दृश्य का भी आनंद लेना चाहते थे।
 इसका कारण यह भी हो सकता है कि लेखक स्वयं
 फर्स्ट क्लास का टिकट लेने में असमर्थ हो और
 थर्ड क्लास में भीड़-भाड़ होती है। इसलिए लेखक
 ने सैकंड क्लास का टिकट लेना ही उचित समझा
 होगा।

(घ) लेखक ने अपना आत्म-सम्मान आत्म-सम्मान का कि

(घ) लेखक ने अपना आत्म-सम्मान और गुमान बनाए रखने के लिए ही खीरा खाने से इनकार कर दिया था। यदि लेखक खीरा खा लेंते तब भी नवान साहब खीरा नहीं खाते क्योंकि वे खीरे जैसी साधारण वस्तु को खाने में शर्म अनुभव कर रहे होंगे। वे एक नवान थे जो अपनी अमीरी का दिखावा कर और टोंग कर रहे थे। वे घमंडी स्वभाव के थे और रईसी दिखाने के चक्कर में अपना नुकसान करा बैठे थे। इसलिए यदि लेखक ने खीरा खा भी लिया होता तो भी नवान साहब को खीरा खाना मंजूर नहीं होता।

2. (ख) 'अट नहीं रही है' कविता में विशालजी ने प्रकृति की मादकता का वर्णन किया है। मज्जीव वर्णन किया है। फागुन के महीने में चारों ओर वातावरण मनुष्य को मंत्रमुग्ध कर देता है। सबका मन प्रसन्न हो जाता है और जीवन में नया जोश भर जाता है।

पेड़ों पर लगे लाल और हरे नए पत्ते जन्तुजीवन का संकेत देते हैं। चारों ओर सुगंध फैल जाती है। मनुष्य का आसमान में पक्षी की तरह भाग्य होकर उड़ने का करने लगता है। प्राकृतिक सुंदरता अपने चरम पर होती है इसलिए ऐसा लगता है जैसे मनुष्य प्रकृति ने अपने गले में फूलों की सुगंधित माला पहन ली हो।

(ग) 'कन्यादान' कविता में ब्रह्मराज जी ने लड़की होने पर लड़की का जैसी दिवाई न देना की बात लड़की की माँ द्वारा प्रस्तुत की है। यह बात तत्कालीन समाज पर व्यंग्य है जो लड़कियों के लिए असुरोक्त है। लड़की की माँ विदाई के समय इसे कहती है कि लड़की की तरह कमल, सरल और मधुर रचना पर कमजोर और झाली मत बनना क्योंकि वह इसे समाज से होने वाले शोषण और दुख परिस्थितियों से बचना चाहती है। वह नहीं चाहती कि उसकी बटी को वह सब झेलना पड़े जो अप्राप्त स्त्रियों को झेलना पड़ता है।

(घ) 'कन्यादान' कवि में आई पंक्ति 'लड़की अभी सधानी नहीं थी' के माध्यम से लड़की की माँ कहना चाहती है कि उसकी बेटी अभी दुनियादारी नहीं समझती है। उसे केवल विवाह के सुखों का ज्ञान है दुखों का नहीं। क्योंकि अपनी माँ के घर वह दुख से डरती रही है। वह विवाह की सुखद कल्पनाओं में जीती है। उसे यह नहीं पता कि उसे समाज में राज होने वाली घिनौनी हरकतों के बारे में नहीं पता है जिस कारण माँ चिंतित है कि वह इस दुनिया में कैसे जिलगी।

उ. (क) मुझे इस बात से सहमत है कि 'माता के अंचल' पाठ में वर्णित खेल-खिलौनों की दुनिया वर्तमान खिलौनों की दुनिया से बेहतर थी। इसका कारण यह है कि पुराने जमाने में बच्चे प्राकृतिक चीजों के साथ खेलते थे जैसे मिट्टी, तिनके, पेंसिल, चिरनी, चूड़ेदानी, पानी आदि जिससे उनका प्रकृति के प्रति स्नेह बढ़ता था।

आज-कल के बच्चों को मोबाइल और कंप्यूटर गैमों से

फुरसत नहीं है। वे सारा दिन घर में रहते हैं और कभी बाहर नहीं निकलते। उनके जीवन में कृत्रिमता का समावेश है। आजकल के बच्चे पड़ोस-कलचर भी खत्म हो गया है जिससे कि बच्चे दोस्तों के साथ नहीं खेल पाते और प्रकृति का भी प्रयोग निरप्रकृत ढंग से करते हैं।

पाठ में बच्चों के माता-पिता भी खेलों में तब्त शामिल होकर मित्र की भूमिका निभाते थे परंतु आज सभी माता-पिता नौकरियों में इतने व्यस्त हैं कि घरवालों के लिए उनके पास समय नहीं है। वे बच्चों को प्लेस्टिक के खिलौने, वीडियो गेम, पी.सी (PC) आदि देकर अपने वात्सल्य को पूरा करते हैं।

(ख) 'जॉर्ज पंचम की नाक' पाठ में लेखक ने 'नाक' को मान, सम्मान और प्रतिष्ठा का द्योतक बताया है। नाक एक व्यक्ति की ज्ञान और इज्जत का प्रतीक होती है।

जॉर्ज पंचम की लाट पर नाक नहीं थी जो ब्रिटिश शासन के अपमान का प्रतीक थी। सभी अधिकारियों ने अपना रोष प्रकट नहीं किया। बल्कि नाक लगाने में इंतगार क्योंकि ब्रिटेन की महारानी एलीजाबेथ द्वितीय पधारने वाली थी। इसके समाधान के लिए मूर्तिकार को बुलाया गया।

मूर्तिकार हिंदुस्तान के दर पहाड़ और खान में गया, पर उसे लाट का पत्थर नहीं मिला। फिर उसने शर्मनाक सुझाव दिया कि देश के महापुरुषों की लाट पर से एक नाक आकर लगा दी जाए, परंतु सबकी नाक जॉर्ज की नाक से बड़ी निकली। वह हताश हो गया पर दर नहीं मान। विद्यार संक्रेटरिएट के सामने लगी सन् 1942 में शहीद बच्चों की लाट से नाट उतारने का सुझाव रखा गया, पर उनकी नाक भी बड़ी निकली।

अंत में एक हिंदी व्यक्ति की नाक काट कर लज्ज की गई। यह बात पूरे देश के आत्म-सम्मान पर कथारी चोट करने वाली थी।

(खण्ड-ख)

4. (ख)

ऑनलाइन खरीदारी: व्यापार का नकलता स्वरूप

आजकल हर बड़े शहर से लेकर छोटे-मोटे गाँवों तक ऑनलाइन खरीदारी का बोलबाला है। हम किसी भी समय, कहीं भी बैठ कर ऑनलाइन कुछ भी मँगा सकते हैं, वह भी बहुत कम दामों पर। दो दशक पहले तक ऐसी बहुत ही कम कंपनियाँ थीं जो ऑनलाइन व्यापार करती थीं परंतु आज बहुत कम ऐसी कंपनियाँ हैं जो ऑनलाइन व्यापार नहीं करतीं। आज छोटे-से-छोटे बच्चा इंटरनेट से सामान मँगाना जानता है। ऑनलाइन शॉपिंग एपों में फ्लिपकार्ट, मीशो और स्नेपडील

जैसी ब्रांड शिखर पर हैं। इनसे कपड़े, जूते, सजावट के सामान से लेकर इंसोर्ड घर तक का सामान मँगवाया जा सकता है। जॉमेंट और सिगगी जैसे एपों की मदद से खाने तक का सामान चाहे घंटे से भी कम समय में मँगवाया जा सकता है। ~~लेकिन यहाँ से इसकी बहुत जरूरत है भारत को क्योंकि दूर-दराज के इलाकों में पहले किसी व्यवसायी की पहुँच नहीं थी और लोगों को बहुत दूर से सामान खरीदकर लाना पड़ता था परन्तु आज सबसे कम दामों में यह उपलब्ध है।~~

~~ईऑनलाइन खरीदारी के नकारात्मक प्रभाव बहुत हैं जैसे कई लाखों-करोड़ों लोगों को रोजगार मिला है, दूर के गाँवों में सामान मिलने लगा है कम समय और सस्ते दामों में लेकिन इसके कई नकारात्मक प्रभाव भी देखने में आए हैं जैसे गरीब और छोटे व्यवसायी व्यवसाय करने वाले लोगों का धंधा चॉपट हो गया है और वे पहले से ज्यादा गरीब हो गए हैं। इसका अन्व प्रभाव युवा पीढ़ी पर पड़ा है। जवान युवक-युवतियाँ सारा समय मोबाइल में अपने पसंद के उत्पाद देखने में व्यतीत करते हैं और नौकर~~

नायक - नायिकाओं की नकल करने का प्रयास भी करते हैं जिससे वे अपने दृष्टिकोण से साक्षिक भी स्वर्ण कर दें ~~क~~ देन में भी नहीं कतराते हैं।

सरकार को मरीन छोटे कारीगरों का व्यवसाय बनाए रखने के लिए कई नियम लागू करने चाहिए और हमें, विशेषकर युवाओं को छोटे विक्रेताओं से भी उत्पाद खरीदने चाहिए ताकि उन्हें भी अपने रोजगार के लिए बढ़ावा मिले और वे अपनी दैनिक जरूरतें भी पूरी कर सकें।
तथा अपने परिवार की

पत्र लेखन

5. (क)

परीक्षा भवन

करनाल - 132xxx

दिनांक: 18 मई, 2022

प्रिय भाई रोहन, ✓

सस्नेह नमस्कार। ✓

मैं यहाँ समस्त परिवारजनों के साथ कुशलमंगल हैं आशा है कि तुम भी होस्टल में सुख-सुखल होंगे। मुझे पिताजी ने बताया कि तुम सोशल मीडिया पर बहुत अधिक समय व्यतीत कर रहे हैं जो जिसके कारण सभी विषयों में तुम्हारे अंक बहुत ज्यादा गिर गए हैं। यह तुम्हारे भविष्य के लिए बिल्कुल भी अच्छा नहीं है।

प्रिय भाई रोहन! मैं तुम्हारी बड़ी बंधन होने के बारे में तुम्हें यह बता रही हूँ कि यह ~~अ~~ समय तुम अपनी युवावस्था



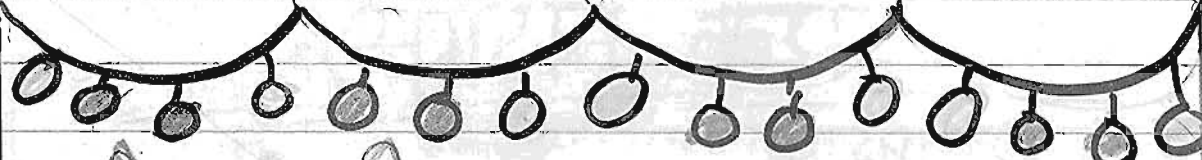
में हो और यही वह इम्र है जब तुम अपने व्यवस्था का सुखद
निर्माण करने के लिए हर संभव प्रयास करो। मैं जब
 भी मोबाइल चलाती हूँ तुम ऑनलाइन मिलते हो। तुम्हें
 सोशल मीडिया के दुष्प्रभावों का ज्ञान नहीं है। इसपर इसका गलत
 इस्तेमाल होता है जैसे धोखाधड़ी, अश्लीलता और अकारणता भी
फैलती जाती है। इससे तुम्हारे स्वास्थ्य पर ^{इससे} बुरा असर पड़ेगा। तुम्हारा
वजन बढ़ सकता है, यहाँ तक कि तुम्हारी साँसें भी कमजोर हो
जाएंगी। इससे अच्छा तो तुम पार्क में टहलने ~~चले~~ जाया करो।

मैं आशा करती हूँ कि तुम आगे से शिकायत का मौका मुझे नहीं दोगे,
 अपनी पढ़ाई पर ध्यान ~~दोगे~~ और योग ~~हूँ~~ एवं व्यायाम किया
 करोगे। मैं तुम्हारे हमेशा स्वस्थ और सुखी रहने की कामना
 करती हूँ।

तुम्हारी डूबती बहन
 (क. ख. ग.)

विज्ञापन

6. (i) (2d)



बैशनी

ब्रांड के सोलर लैंप
और लाइटों से लॉट
अपने जीवन में उजाला

ऑफर

ऑफर

ऑफर

विशेषताएँ -

- 20 साल से ज्यादा चमके
- प्रकृति के संरक्षक है
- गारंटी के साथ



केवल 50/-
से शुरू

इच्छुक ग्राहक संपर्क करें - 98120-XXXXXX

6. (ii)
(क)

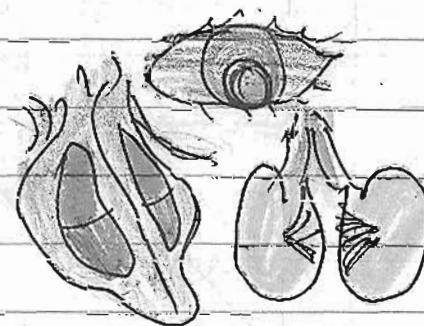
अंगदान कैंप

स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा

अंगदान है मधादान

गरीब और वंछित लोगों के इलाज के लिए अपने अंग अवश्य दान करें। मरने के उपरांत अंगदान करने से मधापुण्य मिलेगा।

सरकार द्वारा आयोजित कैंप में अपने अंगों को दान करवाने का रजिस्ट्रेशन अवश्य करवाएँ।



स्थान - मोग्रेंद्र कला केंद्र

समय - 10:00 बजे प्रातः से 5:00 बजे सायं

दिनांक - 20 मई, 2022 से 10 जून 2022 तक

स्वास्थ्य मंत्रालय संपर्क केंद्र → 7204-XXXXXX

संदेश

बधाई संदेश

दिनांक : 18 मई, 2022

समय : 10:00 बजे प्रातः

आफ़नीय भैया राहुल,

मुझे यह ज़ाकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि आपका चयन विद्यालय की फ़ुटबॉल टीम के कप्तान के रूप में हो गया है। आपकी हमेशा से ही खेल में रुचि देखकर सबके लिए यह बात हيران करने वाली नहीं है। हमें हमेशा से पता था कि आप अपने माता-पिता का नाम गर्व से ज़ांग करोगे। आपको असंख्य बधाई और शुभविष्य में आशा करती हूँ कि आप भविष्य में भी सबको गौरव प्रदान करेंगे।

अ. व. स

7.
(ii) (ख)

बधाई संदेश

दिनांक : 18 मई, 2022

समय : 10:00 बजे प्रातः

प्रिय छात्रगण,

आप सभी को 'शिक्षक दिवस' के सफल आयोजन हेतु समस्त प्राचार्यगण की झोर से बहुत-बहुत बधाई। आपके नृत्य और गायन प्रस्तुती-प्रदर्शन ने सबका मन मोह लिया। सभी आपकी वाद-वादी करते नहीं थक रहे थे। सभी आप सभी ने सारा कार्यभार अपने कंधों पर लिया और सारी जिम्मेदारियों का अच्छी तरह निर्वह किया। खाना-पीना और सभी कार्यक्रम पूरे अनुशासन से हुए। फिर से बधाई और भविष्य में सब इसी प्रकार अपना गौरव बनाए रखना।

कै. ख. ११

(प्राचार्य)